Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

भारत रत्न लोकनायक जय प्रकाश नारायण की दृष्टि में बिहार में युवा उत्कर्ष की तलाश

शशिपाल कुमार
शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा
Email: shashipalbittu@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171121
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 124-126
November. 2025

सार–संक्षेप

भारत रत्न लोकनायक जय प्रकाश नारायण भारतीय स्वाधीनता संग्राम के एक निर्णायक व्यक्तित्व रहे। वे सिर्फ एक राजनेता नहीं थे; वे समाज–रचनाकार, दार्शनिक और नैतिक नेतृत्व के प्रतीक थे। उनकी विचारधारा और क्रियावली ने भारतीय समाज विशेषकर बिहार के जन–जीवन, राजनीति और सामाजिक संरचनाओं पर गहरा प्रभाव डाला। जय प्रकाश नारायण की दृष्टि में युवा उत्कर्ष केवल आर्थिक उन्नति नहीं, अपितु नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनरोद्धार का समेकित रूप है। बिहार की प्रासंगिक चुनौतियाँ–आर्थिक पिछड़ापन, शिक्षा की गुणवत्ता, सामाजिक असमानताएँ और राजनीतिक जड़ता, इन सबका सामना केवल तकनीकी नीतियों से नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, नैतिक नेतृत्व और स्थानीय सशक्तिकरण से संभव है। जेपी का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था: जनता, विशेषकर युवा, जब स्वयं को जागरूक, नैतिक और सक्रिय महसूस करेंगे तभी समाज में वास्तविक परिवर्तन आएगा। प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से जय प्रकाश नारायण की दृष्टि के प्रकाश में बिहार में युवा उत्कर्ष की संभावनाओं और चुनौतियों का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है तथा उनके समाजवादी आदर्शों, लोकनायक के नेतृत्व मॉडल, शिक्षा तथा नैतिक पुनरुत्थान के विचारों को आधार मानकर यह समझने का प्रयत्न किया गया है कि बिहार के युवा किस प्रकार उत्कर्ष की ओर अग्रसारित हो सकते हैं।

Submitted: 18 Oct. 2025
Revised: 28 Oct. 2025
Accepted: 11 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

परिचय

भारत के सामाजिक–राजनैतिक इतिहास में लोकनायक जय प्रकाश नारायण का नाम विशिष्ट आदर के साथ लिया जाता है। 20वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण चिंतकों और क्रांतिकारियों में उनका स्थान स्वाभाविक रूप से प्रतिष्ठित है। उनका जीवन सिर्फ राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि वे सामाजिक न्याय, नैतिक नेतृत्व और जनसाधारण में जागृति के प्रतीक रहे। बिहार, उनके कर्मस्थल और जन्मभूमि में से एक, भारतीय समाज और राजनीति के अनेक बदलावों का केंद्र रहा है। जय प्रकाश नारायण के व्यक्तित्व का मूलपाठ नैतिकता, समता, आत्म–नियमन और जनशक्ति में विश्वास पर आधारित था। वे गांधीवादी जीवन–शैली और मार्क्सवादी समाजवाद के तत्वों का संयोजन करते हुए एक ऐसी नीति और दर्शन का प्रतिपादन करते थे जो लोक–हित, सामाजिक न्याय और जन–भागीदारी को सर्वोपरि मानती थी। जेपी का मानना था कि राजनीतिक क्रांति के साथ–साथ सांस्कृतिक और नैतिक परिवर्तन भी अनिवार्य है। वे शिक्षा, स्वराज, ग्राम–स्वराज तथा युवाओं की नैतिकता और कर्मठता पर विशेष बल देते थे। उनकी दृष्टि में विकास केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि समाज के हर स्तर पर समान अवसर, नैतिकता और लोकनायकत्व के आदर्शों का प्रसार है।

युवाओं को लेकर जेपी की सोच

- **नैतिक और सैद्धान्तिक शिक्षा:** जेपी की दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार–प्राप्ति नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक विवेक का विकास होना चाहिए। युवा अपितु राष्ट्र का नैतिक पंगु नहीं बनना चाहिए; उन्हें समाज के प्रति उत्तरदायी, स्वतंत्र चिंतक और नीतिनिर्धारण में सक्षम नागरिक बनाया जाना आवश्यक है।
- **लोक सहभागिता और नेतृत्व:** जेपी मानते थे कि लोकतंत्र की सफलता के लिए जन–भागीदारी अनिवार्य है। युवा पीढ़ी को सिर्फ सत्ता के उपभोक्ता न बनाकर, उन्हें स्थानीय स्वशासन, पंचायतों तथा सामुदायिक संरचनाओं में सक्रिय भागीदार बनाना चाहिए। इससे नेतृत्व क्षमताओं का विकास होगा और युवा समाज की समस्याओं के समाधान में अग्रणी बनेंगे। अधिकार और सत्ता का प्रयोग नैतिकता के साथ होना चाहिए; वे भ्रष्टाचार, अनाचार और सत्ता के दुरुपयोग के कट्टर विरोधी रहे।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
शशिपाल कुमार, शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा

How to cite this article:
कुमार, . शशिपाल . (2025). भारत रत्न लोकनायक जय प्रकाश नारायण की दृष्टि में बिहार में युवा उत्कर्ष की तलाश. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 124–126. https://doi.org/10.5281/zenodo.17877386

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17877386
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

- **आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय:** जेपी का समाजवादी आयाम यह कहता है कि आर्थिक असमानता और जातिगत भेदभाव युवा ऊर्जा को बर्बाद करते हैं। इसलिए सामाजिक नीतियाँ ऐसी होनी चाहिएं जो अवसरों का समतलीकरण कर सकें, विशेषकर बिहार जैसे सामाजिक तथा आर्थिक कठिनाइयों से जूझते प्रदेश में। जाति, वर्ग और लैंगिक असमानताओं के विरुद्ध जेपी ने जीवन भर आवाज उठाई। वे समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों के उत्थान में विश्वास करते थे।
- **स्वावलंबन और कौशल विकास:** जेपी का विचार था कि आत्म–निर्भरता केवल आत्म–शक्ति का प्रश्न नहीं, बल्कि कौशल, शिक्षा और उत्पादन क्षमता से जुड़ा है। युवाओं को स्वरोजगार, कृषि नवाचार और छोटे उद्योगों के माध्यम से आर्थिक सशक्तता दी जानी चाहिए।
- **जन–सत्ता और लोकनीति:** जेपी का मानना था कि वास्तविक लोकतंत्र केवल चुनावी प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि नागरिकों के सक्रिय भागीदारी और जवाबदेही पर आधारित होना चाहिए। वे जनता के भीतर जागरण और नैतिकता की आवश्यकता पर जोर देते थे।
- **शिक्षा और सशक्तिकरण:** शिक्षा को मात्र ज्ञानार्जन के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व के साधन के रूप में देखना जेपी के चिंतन का अभिन्न आयोजन था।
- **स्वराज:** स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, स्थानीय स्वशासन और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सत्ता का विकेंद्रीकरण भी था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जेपी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ नागरिकों, विशेषकर युवाओं, में सक्रिय चेतना, नैतिक बोध और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास हो।

बिहार का इतिहास सामाजिक चेतना, विद्रोह और शिक्षा के आंदोलन से भरा रहा है। परंतु स्वतंत्रता के पश्चात यह प्रदेश कई बार विकास की दौड़ में पिछड़ता दिखा। भूमि–सुधार की चुनौती, जातिगत विभाजन, अल्प अवसर और प्रवासन। ये सभी समस्याएँ युवाओं की संभावनाओं को प्रभावित करती हैं। जय प्रकाश नारायण का स्वतन्त्रता–पूर्व व पश्चात्कालीन सक्रियता का अनेक अनुभव बिहार की सामाजिक–राजनैतिक परिदृश्य को समझने में उपयोगी है।

जेपी ने बिहार में काम करते हुए देखा कि परिवर्तन के लिए केवल सरकारों की नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं; स्थानीय नेतृत्व, सामुदायिक संगठन और युवा सक्रियता की आवश्यकता है। बिहार में छात्र–आंदोलनों की परंपरा रही है, जेपी स्वयं छात्र जीवन से जुड़े आंदोलनों में सक्रिय रहे। यह परंपरा आज भी बिहार के युवाओं में विद्यमान है और यदि सही दिशा दी जाए तो यह परिवर्तन का शक्तिशाली साधन बन सकती है।

बिहार में युवा उत्कर्ष: जेपी के सिद्धांतों के आधार पर उपाय

जेपी के विचारों को आधार मानकर कुछ महत्वपूर्ण नीतिगत और सामजिक उपाय निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किए गए हैं जिनसे बिहार में युवा उत्कर्ष को बढ़ावा दिया जा सकता है:

शिक्षा का समग्र पुनर्गठन

- **वस्तुनिष्ठ और चरित्र–आधारित शिक्षा:** पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, लोकतांत्रिक व्यवहार, सामुदायिक सेवा और इतिहास की सच्ची समझ को साझा किया जाना चाहिए।
- **टेक्निकल और व्यावसायिक प्रशिक्षण:** युवाओं के लिये स्थानीय उद्योगों, कृषि तकनीकों और उद्यमशीलता पर आधारित प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये जाएं।
- **ग्राम–भाषा और संस्कृति का संवर्धन:** मातृभाषा में शिक्षा और सांस्कृतिक शिक्षा से युवाओं में स्वाभिमान और रचनात्मकता बढ़ेगी।

स्थानीय नेतृत्व और स्व–शासन का संवर्धन

- **पंचायती राज की सक्रियता:** युवा मंडलों को पंचायतों में प्रतिनिधित्व दिया जाए; स्थानीय परियोजनाओं में उनकी भागीदारी अनिवार्य हो।
- **युवा नेतृत्व कार्यक्रम:** गतिविधि–आधारित प्रशिक्षण, सार्वजनिक नीति कार्यशालाएँ और नेतृत्व शिविरों के माध्यम से युवाओं को प्रशासकीय और सामाजिक कौशल प्रदान किये जाएँ।

आर्थिक अवसर और उद्यमिता

- **स्व–रोजगार के लिए ऋण और मार्गदर्शन:** छोटे उद्यमों और स्टार्ट–अप्स के लिये सस्ते ऋण, प्रशिक्षण तथा विपणन सहायता प्रदान की जाए।
- **कृषि में नवाचार:** कृषि–युवा को उन्नत बीज, सिंचाई तकनीक, मूल्य–श्रृंखला प्रबंधन तथा कृषि–उद्योग से जोड़कर स्वरोजगार के अवसर दिए जाएं।
- **डिजिटल साक्षरता और तकनीकी समावेशन:** ग्रामीण डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा ई–शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म से युवा बाज़ारों और अवसरों से जुड़े रहे।
- **सामाजिक न्याय और समावेशन**
- **जाति–आधारित विभाजन का निराकरण:** शिक्षा और रोजगार में आरक्षण के साथ–साथ सामाजिक समन्वय कार्यक्रम चलाकर भेदभाव घटाया जाए।
- **स्त्री–शक्ति और लिंग समता:** महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा स्वतंत्रता सुनिश्चित कर युवा समाज को संतुलित और समृद्ध बनाना।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

नैतिकता, सेवाभाव और समाजकुशलता

- **जन–सेवा परियोजनाएँ:** युवाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण जैसी परियोजनाओं में शामिल करके उन्हें सार्वजनिक जीवन के प्रति संलग्न किया जाए।
- **नैतिक शिक्षा के माध्यम:** विद्यालयों और कॉलेजों में अहिंसा, सत्य और सेवाभाव जैसे मूल्यों का प्रचार–प्रसार। जेपी के अनुसार नैतिक पुनरुत्थान के बिना दीर्घकालिक परिवर्तन संभव नहीं।

संभावित बाधाएँ और उनसे निपटने के उपाय

बिहार में युवा उत्कर्ष की राह में कई समसामयिक बाधाएँ हैं जैसे–भ्रष्टाचार, राजनीतिक संकीर्णता, संसाधन–घाटा, परिवारिक निर्देशों का अभाव, तथा अवसरों का असममित वितरण। इन बाधाओं से निपटने के लिए जेपी की सोच के अनुरूप कुछ कदम आवश्यक हैं:

- **शासन–परिवर्तन और पारदर्शिता:** लोकनायक के आदर्शों के अनुसार प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही अनिवार्य करें। सूचना का अधिकार, ई–गवर्नेंस और जन–निगरानी तंत्र को सुदृढ़ बनाएं।
- **सांस्कृतिक पुनर्रचना:** समाज में अवसरों की समानता तथा नैतिकता की संस्कृति का प्रचारकृलोकनायक के जीवन और विचारों को शिक्षा तथा मीडिया के माध्यम से लोकप्रिय बनाएं।
- **सामुदायिक भागीदारी:** विकास परियोजनाओं में स्थानीय समुदायों और युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें ताकि योजनाएँ जमीनी स्तर पर प्रभावशाली बनें।
- **लक्ष्य–नियोजित निवेश:** केंद्र और राज्य सरकारों के साथ–साथ निजी क्षेत्रों को भी बिहार के मानव पूँजी में निवेश के लिये प्रोत्साहित करें।

जय प्रकाश नारायण की विरासत केवल राजनीतिक संघर्ष या आंदोलन तक सीमित नहीं है; उनकी सोच एक व्यापक मानवीय और सामाजिक आदर्श प्रदान करती है। परंतु 21वीं सदी की चुनौतियाँ–वैश्वीकरण, तकनीकी परिवर्तन और श्रमिक संरचनाओं का परिवर्तन, ऐसी हैं जिनके लिए नयी रणनीतियों की आवश्यकता है। बिहार के युवा यदि इन वैश्विक परिवर्तनों का लाभ उठाना चाहें तो उन्हें जेपी के नैतिक और समाजवादी सिद्धांतों को आधुनिक कौशल, नवाचार तथा उद्यमशीलता के साथ संयोजित करना होगा।

युवा उत्कर्ष का मार्ग तभी संभव है जब परंपरा और नवाचार, नैतिकता और कौशल, व्यक्तिगत प्रयास और सामाजिक समर्थन का संतुलन बना रहे। जेपी के आदर्श–लोक–हित, समता, नैतिक नेतृत्व और जनभागीदारी जैसे मूल्यों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। बिहार का सामाजिक तन्तु यदि इन विचारों को अपनाकर अर्थ, शिक्षा और संस्कृति के समेकित निवेश की नीति बनाए तो युवा सशक्त हो कर प्रदेश तथा राष्ट्र दोनों के उत्थान में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

इस प्रकार बिहार में युवा उत्कर्ष की तलाश के लिए जेपी के सिद्धांतों पर आधारित बहुआयामी रणनीति आवश्यक है, जहाँ शिक्षा पुनर्रूपित हो, स्वरोजगार और उद्यमशीलता को बढ़ावा मिले, समाज में समावेशन सुनिश्चित हो और स्थानीय स्वराज के माध्यम से नागरिकों की भागीदारी सशक्त हो। यदि यह मार्ग अपनाया गया, तो बिहार न केवल अपनी ऐतिहासिक महानता का पुनरुद्धार करेगा, बल्कि एक आधुनिक, समावेशी और नैतिक समाज की मिसाल भी बनेगा। यही जय प्रकाश नारायण की प्रेरणा का साकार रूप होगा।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है लोकनायक जय प्रकाश नारायण की दृष्टि में युवा केवल भविष्य के नागरिक नहीं, वर्तमान समाज के सक्रिय निर्माता हैं। उनकी सोच का सार यह है कि युवाओं को चरित्र, कौशल और नेतृत्व में गरीबी से बाहर निकालकर उन्हें स्वाधीनता और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा जाए। बिहार, जहाँ सामाजिक कठिनाइयाँ और अवसर दोनों गहरे रूप से विद्यमान हैं, वहां पर जेपी की विचारधारा एक व्यवहारिक और नैतिक मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकती है। युवा उत्कर्ष तभी सम्भव है, जब शिक्षा से लेकर स्व–रोजगार, स्थानीय नेतृत्व से लेकर राष्ट्रीय नीतियों तक हर स्तर पर समन्वित प्रयास होंगे और इस समन्वय के केंद्र में जय प्रकाश नारायण के सिद्धांतों का अनुपालन होगा। ऐसे में बिहार के युवा केवल प्रदेश का ही नहीं, संपूर्ण राष्ट्र का नेतृत्व करने की क्षमता और कौशल दोनों अर्जित कर सकेंगे।

संदर्भ स्रोत

1. त्रिपाठी, आर.एम. (2012) जय प्रकाश नारायण और नैतिक शिक्षा, विकास प्रकाशन, मेरठ, पृ. 57
2. शुक्ला, बी. डी. (2011) जय प्रकाश नारायण के दृष्टि में लोक सहभागिता और नेतृत्व, माया पुस्तक महल, कानपुर, पृ. 104
3. पटेल, डी. सी. (2015) जय प्रकाश नारायण का सामाजिक आदर्श, कृष्णा पब्लिशिंग हाउस, आगरा, पृ. 54
4. सिंह, एस. पी. (2016) जय प्रकाश नारायण का स्वावलंबन और कौशल संबंधी विचार, पुष्पा प्रकाशन, मथुरा, पृ. 87
5. अस्थाना, आर. पी. (2018) वर्तमान समय में जे. पी. के विचारों की प्रासंगिकता, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 64
6. शर्मा, एस. के. (2015) जय प्रकाश नारायण और स्वराज, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 97
7. शर्मा, संदीप के. (2014) जय प्रकाश नारायण और युवा नेतृत्व, रावत पब्लिकेषन, जयपुर, पृ. 36